कामधेनु

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

अगस्त – 2018

अन्तर्पृष्ठीय....

पंच परमेष्ठी के प्रतीक जैन ध्वज की स्थापना

आचार्य महाप्रज्ञ वाङ्मय परियोजना – जैन विश्व भारती का गौरव

जैन विश्व भारती का भूमि नियमन

राजस्थान सरकार की मुख्यमंत्री महोदया का आगमन

जैन विश्व भारती

पोस्ट बॉक्स नं.8, पोस्ट लाडनूं – 341306

जिला : नागौर, राजस्थान (भारत)

दूरभाष : 91-1581-226025 /080 फैक्स : 91-1581-227280

ई–मेल : jainvishvabharti@yahoo.com वेबसाइट : www.jvbharti.org

Created by : JPC, jaipur@jpcindia.com

आशीर्वचन

अर्हम्

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्धारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृन्द, समणीवृन्द और मुमुक्षुवृन्द का भी आवास स्थल बना हुआ है। तेरापंथ समाज मानों इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती रहे तथा समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

कार्यशील कार्मिक

अगस्त – 2018

द्विवर्षीय कार्यकाल विशेषांक

कामधेनु

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

प्रकाशक
राजेश कोठारी, मंत्री
जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट – लाडनूं – 341 306
जिला – नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : +91-1581-226025 / 080
फैक्स : +91-1581-227280
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाइट : www.jvbharati.org

मुद्रक
जयपुर पब्लिसिटी सेन्टर
डी-24, शान्ति पथ, तिलक नगर, जयपुर-04
फोन : 0141-2621061/62

विषयानुक्रम

1. प्रकाशकीय – राजेश कोठारी 02
2. अध्यक्ष की कलम से 03
3. जैन विश्व भारती की निधियां – पुखराज बड़ोला 04
4. नव टीम – नव संभावनाएं : जैन विश्व भारती पदाधिकारीगण 05
5. नव टीम – नव संभावनाएं : जैन विश्व भारती न्यासीगण 06
6. पूज्यप्रवर का पावन पाथेय 07
7. आत्मविश्वासी एवं सबल टीम 08
8. नव टीम का स्वागत एवं दायित्व ग्रहण समारोह 09
9. नव नेतृत्व : नव दिशा 10
10. आगन्तुक अतिथि सम्मान एवं अभिनन्दन 11
11. विशिष्ट उपलब्धियां : मील के पत्थर
    1. पंच परमेष्ठी प्रतीक जैन ध्वज की स्थापना 12
    2. जैन विश्व भारती का भूमि नियमन 13
    3. आचार्य महाप्रज्ञ वाङ्मय परियोजना – जैन विश्व भारती का गौरव 14–15
    4. आचार्य महाप्रज्ञ आवासीय विद्यालय परियोजना 16
    5. संविधान संशोधन एवं परिवर्तन तथा कर्मचारी कल्याण योजना 17
12. स्मृतियों की रेखाएं : आनंद का स्त्रोत 18
    1. शिक्षा विभाग : अमरचंद लूंकड़, विभागाध्यक्ष 19
    2. साहित्य विभाग : धरमचन्द लूंकड़, विभागाध्यक्ष 20
    3. प्रेक्षा फाउण्डेशन : अरविन्द संचेती, विभागाध्यक्ष 21
    4. समण संस्कृति संकाय : मालचंद बेगानी, विभागाध्यक्ष 22
    5. शोध : मनोज लूनिया, विभागाध्यक्ष 23
    6. विमल विद्या विहार : पुखराज बडोला एवं तनसुख नाहर, संयुक्त संयोजक 24
    7. महाप्रज्ञ इण्टरनेशनल स्कूल, जयपुर : पन्नालाल पुगलिया एवं गौरव जैन मांडोत, संयुक्त संयोजक 25
    8. महाप्रज्ञ इण्टरनेशनल स्कूल, टमकोर : रणजीतसिंह कोठारी, संयोजक 26
13. विकास की गाथा : सप्तसकार की लेखनी (विविध गतिविधियां) 27
    1. शिक्षा 28–36
    2. शोध 37
    3. साहित्य 38–39
    4. संस्कृति 40–43
    5. साधना 44
    6. सेवा 45
    7. समन्वय 46
14. अन्य कार्य :
    1. आनंद निलय कार्य प्रगति 47
    2. आचार्य महाश्रमण फिजियोथेरेपी सेण्टर की स्थापना 48
    3. परिसर : जय तुलसी फाउण्डेशन कार्यालय का निर्माण 48
    4. आंवला गार्डन का निर्माण एवं संरक्षण 49
    5. जैन विश्व भारती में मीठे पानी की आपूर्ति प्रारम्भ 49
15. विशिष्टजन आगमन :
    1. राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री महोदया का आगमन एवं प्रवास 50
    2. मुनिवृन्द का सेवार्थ प्रवेश तथा अभिनन्दन एवं अभिवन्दन समारोह 51
16. सत्र 2016–18 संचालिका समिति एवं न्यास मंडल की बैठकें 52

प्रकाशकीय

आराध्य के चरणों में वंदन। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा दृष्टि व आशीर्वाद से मुझे तेरापंथ की प्रतिष्ठित संस्था और समाज की कामधेनु जैन विश्व भारती के मंत्री पद पर पदासीन होकर धर्मसंघ की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती समाज की एक गौरवपूर्ण संस्था है। प्रथम अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी से लेकर तृतीय अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे धर्मसंघ के तीन तीन आचार्यो का सुदीर्घ मार्गदर्शन एवं सान्निध्य की अधिकारी यह कामधेनु रही है। समाज के अनेक कार्यकर्ताओं ने श्रमशीलता के साथ पूज्यवरों के स्वप्नों को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए। मेरा यह सौभाग्य है कि उन कार्यकर्ताओं की श्रृंखला में मुझे भी जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

वर्तमान टीम का कार्यकाल सम्पन्नता की ओर है। जैन विश्व भारती जैसी विशाल संस्था के मंत्री पद पर आसीन होने के पश्चात पद के साथ साथ महत्वपूर्ण दायित्व भी प्राप्त हुए। एक प्रोफेशनल होने के नाते मेरा सर्वप्रथम कार्य था, जैन विश्व भारती की लेखा पद्धति में युगानुकूल एवं संविधान अनुकूल सुधार करना। सम्पूर्ण टीम के सहयोग से उक्त कार्य सहजता से सम्पन्न हुआ। लेखा संबंधी कार्यो जैसे विदेशी विनियामक में पंजीयन, साइंटिफिक इण्डस्ट्री एवं रिसर्च संस्थान के अन्तर्गत नवीनीकरण इत्यादि बहुत से कार्यो के नियमितिकरण की आवश्यकता थी, जिन्हें समस्त टीम के सहयोग से पूर्ण किया गया एवं विशेष रुप से श्री प्रमोद बैद, कोलकाता का सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के कार्मिकों का भविष्य निधि एवं राज्य कर्मचारी बीमा के अन्तर्गत पंजीयन कर्मचारी कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण रहा, जो विगत लम्बे समय से लंबित था। संस्था की दिन प्रतिदिन की गतिविधियों में यथासंभव सक्षम निर्देशन एवं नियंत्रण का प्रयास किया गया।

पद की एक व्यवस्था होती है परन्तु कार्य की दृष्टि से सभी कार्यकर्ता समान है। मुझे भी ऐसे श्रमशील एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं का सहयोग सदैव टीम के रुप में प्राप्त हुआ। मुख्य न्यासी श्री पुखराज बडोला, अध्यक्ष श्री बी.रमेशचंद बोहरा ने सदैव एक अग्रज की भांति एवं भाई गौरव ने एक अनुज की भांति मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया। मैं मंगलकामना करता हूं कि जिस प्रकार हमारी टीम व संपूर्ण समाज ने अभी तक जैन विश्व भारती की सभी गतिविधियों के विकास में यथाशक्ति तन-मन-धन से सहयोग एवं सहभागिता प्रदान की, उक्त निरन्तरता सदैव बनी रहे।

पूज्यप्रवर के पावन आशीर्वाद, कार्यकर्ताओं के परिश्रम एवं आप सबके सहयोग जैन विश्व भारती सफलता की ऊंचाईयों की ओर अग्रसर है। संस्था की इस विकास यात्रा को समाज के समक्ष पहुंचाने में यह प्रत्रिका कामधेनु योगभूत बनेगी, ऐसी आशा करता हूं।

इस पत्रिका के प्रकाशन का कार्य करने में पूज्यप्रवर के आशीर्वाद, साध्वीप्रमुखाश्री जी एवं मंत्री मुनि के वात्सल्य भाव ने मुझे उक्त कार्य को पूरा करने की अनन्त शक्ति प्रदान की। समस्त पदाधिकारीगण, न्यास मंडल एवं संचालिका समिति सदस्यों का मुझ पर अनन्य विश्वास ही मेरे लिए सदैव प्रेरक बना रहा।

मैं सभी के प्रति कृतज्ञता एवं आभार के भाव प्रकट करता हूं। आशा है जिस लक्ष्य के साथ कामधेनु पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, उसमें शतप्रतिशत सफलता प्राप्त होगी।

क्षमायाचना के भावों के साथ।

राजेश कोठारी

मंत्री

अध्यक्ष की कलम से ...

मैं सर्वप्रथम वंदना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित करता हूं जिनके चरणों में भी संजीवन है। मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी, जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं समस्त चारित्रात्माओं को सविनय वंदना। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शब्दों में निर्माण की पुरोधा इस संस्था की गतिविधियां व्यापक है। इन सभी गतिविधियों का प्रयोजन भारतीय संस्कृति एवं विशेषत: जैन संस्कृति के मूल में बसे हुए मानवीय मूल्यों को प्रकाश में लाना है। इन गतिविधियों का मूल उद्देश्य गणाधिपति तुलसी द्वारा स्थापित एवं पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा विकासित सत्य, अहिंसा, मानवीय एकता, नैतिक उत्थान एवं शिक्षा के नवीन स्वरुप को स्थापित करना है। जैन विश्व भारती सही मायने में वह अलौकिक गौ है जो सभी महत्वाकांक्षाओ को पूर्ण कर सकती है। जैन विश्व भारती के माध्यम से समस्त मानव जाति की जागतिक समस्याओं का सटीक समाधान संभव है। यही स्वप्न था गुरुदेव तुलसी का, अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का और यही स्वप्न है महातपस्वी युवामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी का।

जैन विश्व भारती के इस ऊर्जा क्षेत्र में आकर प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को ऊर्जावान महसूस करता है। कभी कभी यह प्रतीत होता है कि गुरुदेव तुलसी ने एक बीजारोपरण किया जो अंकुरित हुआ, वट वृक्ष बना और आज उसकी शाखाएं विश्व में प्रत्येक ओर फल फूल रही है और प्रसारित हो रही है। जैन विश्व भारती की विकास यात्रा में सैंकडों महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है। संस्था का लगभग 1250 सदस्यों एवं इतने ही अनुदानदाताओं का विशाल समृद्ध परिवार है तथा इतना ही विशाल परिवार कार्यकर्ताओं का है। मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे पूज्यप्रवर की छत्र छाया में इस विशालतम परिवार के कर्ता का दायित्व प्राप्त हुआ तथा इस वट वृक्ष को सींचने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कामधेनु के माध्यम से हम सत्र 2016-18 के द्विवर्षीय कार्यकाल की विकास यात्रा के कुछ अमिट चिन्ह संकल्प की बूंदो के साथ प्रस्तुत रहे हैं। ये अमिट चिन्ह, उपलब्धियां एवं रचनात्मक स्थितियां आप सभी के सहयोग की देन है। संस्था आपकी है, आप संस्था के हैं, इन्हीं मनोभावों को संजोए मैं यह कामना करता हूं कि हमारा आपसी सहयोग-सहभागिता प्रगाढ बनी रहे और हम पूज्यप्रवर के सपनों को साकार करने में प्रतिबद्ध रहे। आप सभी का महत्वपूर्ण सहयोग ही संस्था की ताकत है।

सप्त सकार को केन्द्र में रखकर कार्य करने वाली यह संस्था गुरु के आशीर्वाद, समाज के सहयोग एवं सक्षम कार्यकर्ताओं के प्रयासों के फलस्वरुप अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर रही है। आगामी टीम के लिए मेरी कामना है कि ''संस्था के सूत्रधारों के समक्ष संभावनाओं का असीम आकाश भी है और उसे प्राप्त करने का उत्साह, उमंग और जज्बा भी।''

मैं अपनी टीम के लिए व्यक्तिश: नामोल्लेख किए बिना इस बात को दोहराना चाहता हूं कि मेरी टीम के प्रत्येक सदस्य ने सौंपे गए दायित्वों को अथक श्रम एवं संकल्प के साथ पूरा किया, जो समाज के समक्ष स्वयंभू ही प्रस्तुत है। संघ एवं समाज इसे अनुभूत कर प्रसन्नता एवं उल्लास की अनुभूति करेगा।

अंत में मैं यही मंगलकामना करता हूं कि हम सबका यह दायित्व बनता है कि हमारी सृजन चेतना एवं रचनात्मक सोच दिन प्रतिदिन उर्वरा बनी रहे और हम गुरुदेव तुलसी की इस कामधेनु को, इस संस्थान को सार्थक आयाम देने के लिए कृतसंकल्प रहें।

कैसे स्वर्ण शिखर छू पाएं, आओ मिलकर आज विचारें।
त्वरित करो गतिमान चरण को, मंजिल हर पल तुम्हें पुकारे।।

क्षमायाचना के साथ।

ओम अर्हम्

बी. रमेश चन्द बोहरा

जैन विश्व भारती की निधियां

आराध्य के चरणों में वंदन। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा दृष्टि व आशीर्वाद से मुझे जैन विश्व भारती की अमूल्य निधियों की रक्षा का महत्वपूर्ण दायित्व प्रदान किया गया। मन में संशय भी था कि जैन विश्व भारती जैसी शीर्षस्थ संस्था की विशाल निधियों का संरक्षण किस प्रकार होगा परन्तु पूज्यप्रवर के आशीर्वाद, सहयोगियों के विशेष सहयोग से मैं समस्त निधियों का न केवल संरक्षण कर पाया, अपितु यथासंभव संवर्धन भी समाज के विशिष्ट सहयोग से पूर्ण किया।

जैन विश्व भारती जैसा कि पूज्य आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में कामधेनु पर्याय है, यह वास्तविकता है कि जिस समय इस तपोस्थली पर दायित्वग्रहण के समय प्रवेश किया, मन में असीम शांति का अनुभव हुआ कि यहां तो सम्पूर्ण परिसर में अमूल्य निधियां वासित है, तो संस्था को पृथक से किसी निधि कें संचय की आवश्यकता नहीं है।

जैन विश्व भारती एक ऐसा स्थल है जहां पर जैन विश्व भारती के तीनों अनुशास्ताओं का सुदीर्घ प्रवास रहा है, यहां के कण कण में अमृत का अनुभव होता है। इस कार्यकाल के दौरान मेरा जब भी यहां प्रवास रहा इस धरती पर प्रवेश करते ही समस्त चिन्ताएं चिन्तन में परिवर्तित हो जाती।

समाज का विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण सहयोग इस संघीय संस्था को सदैव प्राप्त रहा है। जैन विश्व भारती का समृद्ध साहित्य, समुन्नत साधना, सम्पन्न संस्कार आदि ऐसी निधियां है, जिनके संरक्षण का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मैं कृतज्ञ हूं पूज्यप्रवर का जिन्होंने मुझ पर विश्वास कर ऐसा दायित्व प्रत्यायोजित किया।

मेरे कार्यो में सदैव न्यासमंडल के सहभागियों का अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ एवं अध्यक्ष श्री बी.रमेशचंद बोहरा, मंत्री श्री राजेश कोठारी एवं मेरे अनन्य सहयोगी निवर्तमान अध्यक्ष श्री धरमंचद लुंकड़ का मार्गदर्शन एवं सहभागिता सदैव प्राप्त रही।

इस कार्यकाल के समापन के अवसर पर मंत्री श्री राजेश कोठारी द्वारा कामधेनु पत्रिका का प्रकाशन कर समाज को निवेदन किया जा रहा है। मैं उनके इस प्रयास के प्रति उनके लिए साधुवाद प्रकट करता हूं कि उन्होनें अपार श्रम एवं समय का नियोजन कर उक्त कार्य पूर्ण किया।

मेरे इस पद दायित्व के दौरान कोई भी अविनय हुआ अथवा किसी को भी मन वचन कर्म इत्यादि से ठेस पहुंचायी हो तो, क्षमायाचना करता हूं।

क्षमायाचना के भावों के साथ।

पुखराज बडोला
मुख्य न्यासी

नव टीम : नव संभावनाएं

कुलपति

श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, दिल्ली

पदाधिकारीगण

श्री बी. रमेशचंद बोहरा, चेन्नई
अध्यक्ष

श्री धरमचंद जी लुंकड, चेन्नई
निवर्तमान अध्यक्ष

श्री अरविन्द कुमार संचेती, अहमदाबाद
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री जोधराज बैद, दिल्ली
उपाध्यक्ष

श्री ओम जालान, कोलकाता
उपाध्यक्ष

श्री तनसुख नाहर, चेन्नई
उपाध्यक्ष

श्री विमलचंद रूणवाल, जयसिंगपुर
उपाध्यक्ष

श्री राजेश कोठारी, चेन्नई
मंत्री

श्री जीवनमल जैन (मालू) बंगाई गांव
संयुक्त मंत्री

श्री मनोज कुमार ढूगड़, कोलकत्ता
संयुक्त मंत्री

श्री गौरव जैन, मांडोत, जयपुर
कोषाध्यक्ष

नव टीम : नव संभावनाएं

न्यास मंडल

श्री पुखराज बडोला, चेन्नई
मुख्य न्यासी

श्री भागचन्द बरड़िया, लाडनू
न्यासी

श्री मनोज कुमार लूनियां, सिलोंग
न्यासी

श्री प्रमोद बैद, कोलकात्ता
न्यासी

श्री ललित कुमार दूगड़, चेन्नई
न्यासी

श्री महेन्द्र कुमार जैन, बैंगलोर
न्यासी

श्री भैरुलाल चौपड़ा, अहमदाबाद
न्यासी

श्री डी. गौतम कुमार सेठिया, तिरुवन्नामल्लै
न्यासी

पूज्यप्रवर का पावन पाथेय

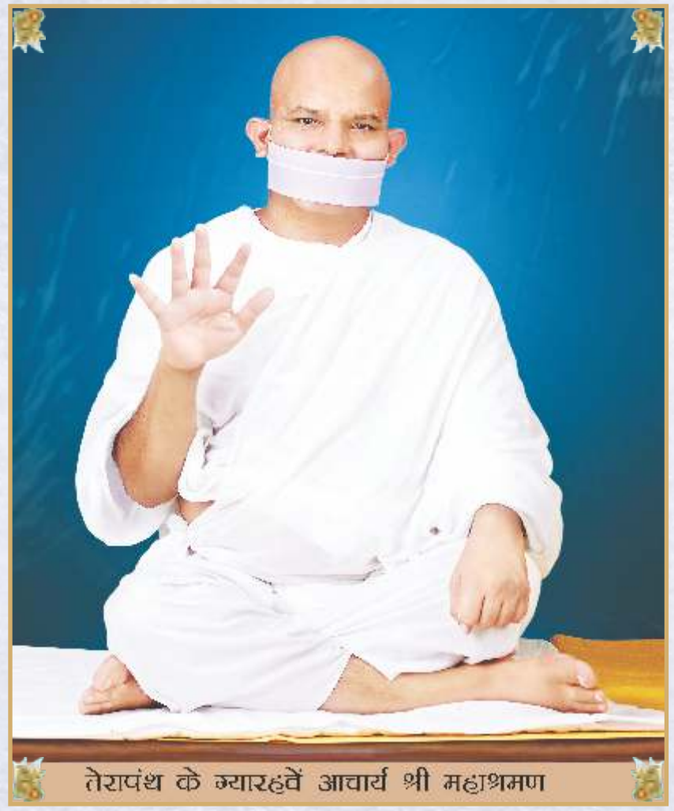

ज्ञान ज्योति गुरु दीप ही, तम का करे विनाश
लगन परिश्रम दीप घृत, श्रद्धा प्रखर प्रकाश
गुरु कृपा से जैविभा में हुआ खूब उच्छास।।

महान आत्मविश्वास
भविष्य की सुन्दर आकांक्षाएं
नव पथ पर अग्रसरित
नव टीम : नव संभावनाएं

स्वागत एवं दायित्व ग्रहण समारोह

लक्ष्य न ओझल होने पाये, कदम मिलाकर हम चले।
पूज्यप्रवर का वरदहस्त, आशीष सदा साथ चले।।

दिनांक 04 अक्टूबर 2016 को
अध्यक्ष **श्री बी. रमेशचंद बोहरा**
सहित नई टीम का जैन विश्व भारती
पहुंचने पर हुआ भव्य स्वागत

नव नेतृत्व : नव दिशा
जैन विश्व भारती को मिला नया नेतृत्व

हौंसला कर बुलंद
साहस व हिम्मत के संग
निर्भय होकर आत्मविवास से बढे
संयम व धैर्य से सफलता की सीढी चढे।

अध्यक्ष श्री बी. रमेशचंद बोहरा,
मुख्य न्यासी श्री पुखराज बडोला
एवं मंत्री श्री राजेश कोठारी
ने जैन विश्व भारती सचिवालय
में किया दायित्व ग्रहण

आगन्तुक अतिथि सम्मान एवं नव टीम अभिनन्दन

पंच परमेष्ठी के प्रतीक 108 फीट ऊँचे जैन ध्वज की स्थापना

पचरंगी आराधना

लाल रंग प्रतीक है मर्यादा एवं अनुशासन का : पूज्यप्रवर का विकटतम परिस्थितियों में मर्यादाओं का मान संघ का यशोगान प्रस्तुत करता है।

पीला रंग प्रतीक है सरलता का : पूज्यप्रवर की सादगी सबकामन हर लेती है।

सफेद रंग प्रतीक है वैराग्य भाव का : परकल्याण का भाव मन में लिए पूज्यप्रवर अपने लक्ष्य की ओर सम्पूर्ण वैराग्य भाव से अग्रसर है।

हरा रंग प्रतीक है नव सृजन का : पूज्यप्रवर की रचनात्मक शक्ति नव साहित्य का सदैव सृजन करती है।

नीला रंग प्रतीक है विशालता का पूज्यप्रवर के विशाल हृदय में करुणा एवं वात्सल्य का सागर सदैव लहराता है।

विशिष्ट उपलब्धियां : मील के पत्थर

जैन विश्व भारती की भूमि का नियमन : शाश्वतता की ओर कदम

जैन विश्व भारती के प्रबंधन ने जब कार्य दायित्व ग्रहण किया, उस समय पूज्यप्रवर ने मात्र दो कार्य इंगित प्रदान किए। कहने मात्र को तो दो ही कार्य थे परन्तु दोनों का स्वरुप अत्यन्त ही व्यापक रहा। इसमें से एक महत्वपूर्ण कार्य था – जैन विश्व भारती की समस्त कृषि भूमि का अकृषि कार्य हेतु नियमन एवं एकल पट्टा प्राप्त करना। हमारे लिए यह हजारों मीलों की यात्रा के समान कार्य था, परन्तु मन मे संकल्प था कि हजारों मीलों की यात्रा भी प्रथम चरण से ही प्रारम्भ होती है। उक्त कार्य को निष्पादन तक पहुंचाने में हमारे साथ हमारी सुदृढ टीम थी एवं पूज्यप्रवर की ऊर्जामयी वाणी। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रबंधन के महत्वपूर्ण पांच सूत्रों को आधार बनाया गया यथा – लक्ष्य का चयन, योजना का निर्माण अथवा नियोजन, कार्यान्वयन, निर्देशन, समन्वय एवं नियंत्रण। प्रथम चरण अर्थात् लक्ष्य की ओर बढने का इंगित हमें पूज्यप्रवर द्वारा प्राप्त हो गया था। अभी आवश्यक था, प्रभावी योजना का निमार्ण। कार्य योजनाकार के रुप में हमें सहयोग प्रदान किया – श्री मूलचंद नाहर, बैगलौर, श्री भागचंद बरड़िया, न्यासी, जैन विश्व भारती एवं श्री धरमचंद लूंकड़, निर्वतमान अध्यक्ष,जैन विश्व भारती ने। तीनों कल्पनाकारों ने योजना का निर्माण एवं लक्ष्य की नीति का निर्धारण बखूबी किया एवं निष्पति रुपी लक्ष्य को प्राप्त करवाया। अभी समय था कार्यन्विति का, बगैर कार्यान्वयन के लक्ष्य एवं नीति निर्धारण विफल हो जाता है, कार्यान्विति स्वरुप कार्य में भागीदार बने –श्री अभय दुगड़, बैंगलौर एवं श्री गौरव जैन (मांडोत), जयपुर जिन्होनें कार्य को अपूर्व धैर्य के साथ पूर्ण किया। प्रबंधन का एक चरण होता है–समन्वय। जैन विश्व भारती के श्रमशील एवं दृढसंकल्पी अध्यक्ष श्री बी.रमेशचंद बोहरा ने समस्त टीम के मध्य समन्वय का कार्य किया एवं सभी के प्रेरणा स्त्रोत बने रहे। योजना को निष्पति तक पहुंचाने में अनकों कठिनाईयां हमारे समक्ष आयी, परिस्थितियां कभी प्रतिकूल रही तो कभी अनुकूल रही परन्तु पूज्यप्रवर के पावन पाथेय ने सदैव सकारात्मक ऊर्जा से सरोबार रखा। नीति निर्धारक, निर्देशक एवं नियंत्रक के रुप में श्री भागचंद बरड़िया का विशेष सहयोग रहा। किसी भी योजना की परिपूर्णता हेतु समय,श्रम एवं अर्थ तीनों ही स्तम्भ मजबूत होने चाहिए। समाज के उदारमना महानुभावों ने जैन विश्व भारती की इस महती आवश्यकता में मुक्तहस्त अनुदान दिया, अतएव समस्त अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार। सफलता प्राप्ति के सोपान में कार्यकर्ता एक महत्वपूर्ण सोपान के रुप में होता है एवं इस सोपान की भूमिका का निर्वहन किया डा. विजयश्री शर्मा एवं सुशील मिश्रा ने जिन्होंने श्रमशीलता के साथ दायित्व निर्वाह करते हुए संस्था के हित में सर्वोतम कार्य किया। जैन विश्व भारती की टीम के अथक प्रयासों से एवं पूज्यप्रवर की कृपानिधानता से दिनांक 24 अगस्त 2017 को जैन विश्व भारती को एकल पट्टा प्राप्त हो गया।

जैन विश्व भारती की सम्पूर्ण टीम का सौभाग्य रहा कि हमें समाज के साथ साथ प्रशासनिक स्तर पर भी अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ। हम आज अत्यन्त उत्साहित एवं प्रफुल्लित है कि इस द्विवर्षीय कार्यकाल में जैन विश्व भारती की भूमि नियमन का बहुप्रतीक्षित कार्य सम्पन्न हुआ तथा हम जैन विश्व भारती को एक सुरक्षा आवरण प्रदान कर शाश्वतता की ओर उन्मुख कर पाये।

आचार्य महाप्रज्ञ वाङ्मय परियोजना

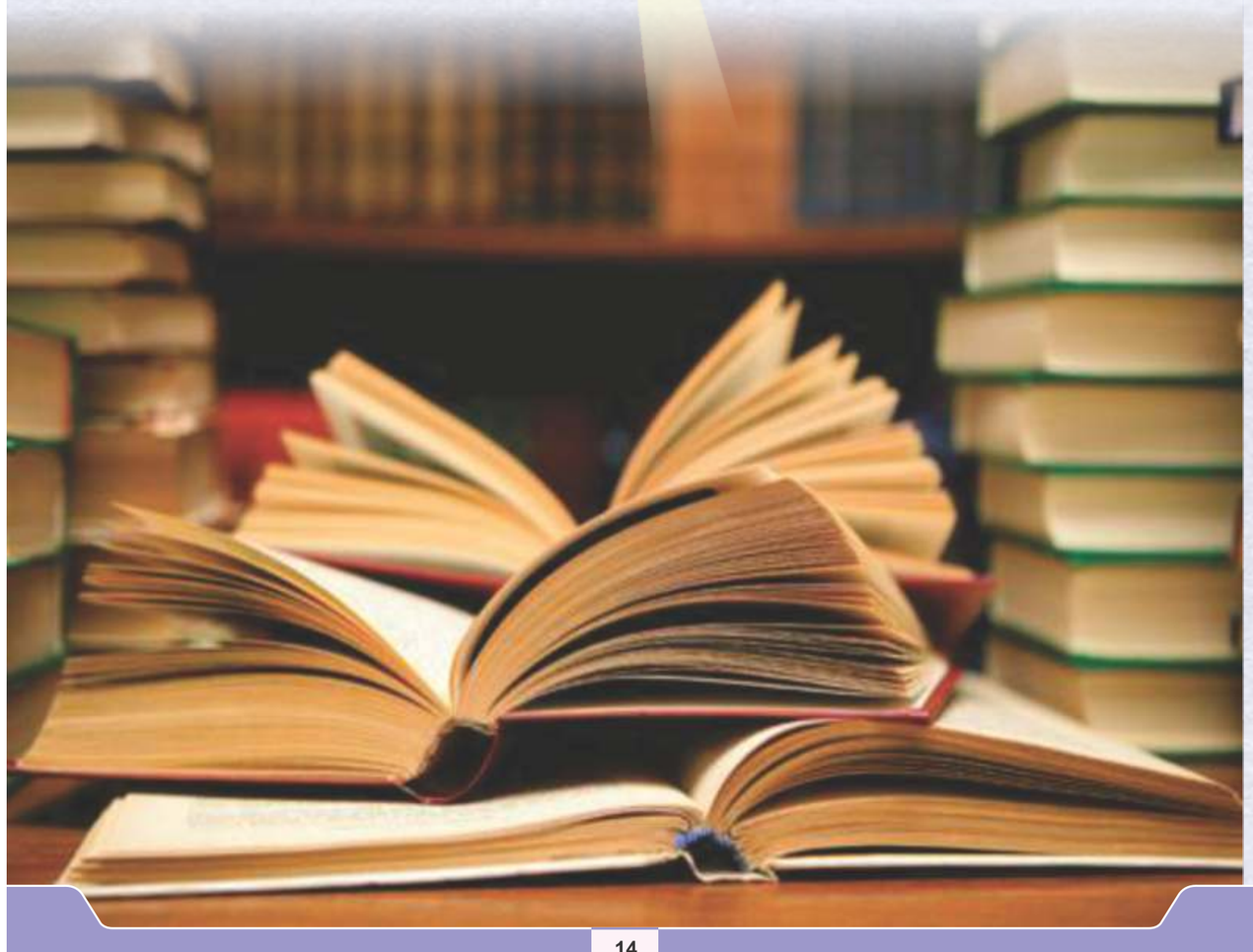

विशिष्ट उपलब्धिया : मील के पत्थर

आचार्य महाप्रज्ञ वाङ्मय कार्य योजना : जैन विश्व भारती का गौरव

प्रस्तावना

पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी के सुअवसर पर श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी के निर्देशानुसार दिनांक 25 अक्टूबर 2016 को चातुर्मास काल में गुवाहाटी में निर्णय लिया गया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा रचित सम्पूर्ण साहित्य का समग्र संकलन किया जाये एवं महाप्रज्ञ वांडमय' के रुप में पुर्नप्रकाशन किया जाये। इस हेतु आदर्श आधार तुलसी वांड़मय का रहे। जैन विश्व भारती के लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के समग्र साहित्य के महाप्रज्ञ वांड़मय के रुप में प्रकाशन का कार्य दायित्व प्राप्त हुआ।

कार्य नियोजन

इस दुरुह कार्य का दायित्व प्रमुख रुप से आदरास्पद मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को दिया गया है। नियोजक के रुप में मुख्य नियोजिका ने अपनी चयनित टीम में साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी श्रुतयशाजी, साध्वी मुदितयशा जी, साध्वी शुभ्रयशाजी, समणी मधुरप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी विनीतप्रज्ञाजी, समणी सौम्यप्रज्ञाजी, डा. मुमुक्षु शान्ता जैन एवं सुश्री वीणा जैन को शामिल किया।

कार्ययोजना

उक्त कार्ययोजना के अन्तर्गत अनुमानित रुप से लगभग 101 पुस्तकों को प्रकाशित करने का लक्ष्य रखा गया है जिसे मुख्यत: निम्न सात खण्डों में विभाजित किया गया है

01. गद्य साहित्य 02. काव्य साहित्य 03. संस्कृत साहित्य
04. प्रवचन साहित्य 05.जीवनी वृत्त साहित्य
06. कथा साहित्य 07. सूक्त साहित्य

वर्ष 2017 से मार्च 2018 तक लगभग 70 प्रतिशत की कम्पोजिंग का कार्य पूर्ण हो चुका है। समस्त पुस्तकों को प्रकाशन से पूर्व आचार्य प्रवर द्वारा निर्धारित साहित्य समिति में समीक्षार्थ प्रस्तुत किया जायेगा। प्रकाशन प्रक्रिया साहित्य समिति के मार्गदर्शन एवं निर्देशन के अनुसार प्रारम्भ की जायेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति

कार्ययोजना को सुचारु रुप से संचालित किये जाने हेतु सात सदस्यीय समिति का गठन पूज्यप्रवर के इंगित अनुसार किया गया जिसमें जैन विश्व भारती के अध्यक्ष, मंत्री एवं साहित्य विभाग के संयोजक सदैव पदेन सदस्य रहेगें। समिति का गठन निम्न अनुसार किया गया :

01.	श्री सुरेन्द्र कुमार चौरड़िया, कोलकाता	संयोजक
02.	श्री मनोज कुमार लूनिया, शिलांग	सदस्य
03.	श्री राकेश कुमार कठोतिया, मुम्बई	सदस्य
04.	संजय धारीवाल, बैंगलौर	सदस्य
05.	अध्यक्ष, जैन विश्व भारती	पदेन सदस्य
06.	मंत्री, जैन विश्व भारती	पदेन सदस्य
07.	संयोजक साहित्य विभाग, जैन विश्व भारती	पदेन सदस्य

कार्य योजना की क्रियान्विति के संदर्भ में समिति द्वारा समय समय पर बैठकें आयोजित की गयी है एवं आगामी योजनाओं का चिंतन किया गया।

पूज्यप्रवर ने महती कृपा कर उक्त महत्वपूर्ण दायित्य जैन विश्व भारती को प्रदत्त किया अतएव, हार्दिक कृतज्ञता। कार्य में महत्वपूर्ण श्रम एवं सहयोग प्रदान कर रहे साध्वी वृन्द, समणी वृन्द के प्रति कृतज्ञता। कार्यकारी की भूमिका के निर्वहन के लिए डा. मुमुक्षु शान्ता जैन, सुश्री वीणा जैन, सुश्री कमला कठोतिया एवं सुश्री माणक कठोतिया के प्रति हार्दिक आभार।

पूज्यप्रवर की कृपा दृष्टि सदैव बनी रहे एवं उक्त लक्ष्य को प्राप्त कर सकें, ऐसी मंगलकामनाएं।

जैन विश्व भारती, लाडनूं

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूल उददेश्यों में शिक्षा का प्रमुख स्थान रहा है। बौद्धिक शिक्षा के साथ साथ मानवीय मूल्यों से युक्त शिक्षा के माध्यम से संस्कारों का निर्माण कर सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण जैन विश्व भारती का लक्ष्य रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी के परिप्रेक्ष्य में स्थायी कार्य के रुप में अन्तर्राष्ट्रीय आवासीय विद्यालय के निर्माण का कार्य जैन विश्व भारती को प्राप्त हुआ है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने शिक्षा पर बहुत बल दिया एवं विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक पक्ष के समान रुप से विकास हेतु शिक्षा प्रणाली में जीवन विज्ञान को समाविष्ट कर सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का अभियान चलाया। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चिंतन को चिरस्थायी बनाये जाने के लिए आचार्य महाप्रज्ञजी के विचारों में शिक्षा स्तर को ध्यान में रख इस परियोजना को मूर्त रुप देने का लक्ष्य रखा गया है।

किशनगंज मर्यादा महोत्सव के अवसर पर इस योजना में सहयोग प्रदान करने वाले तथा अनुदान घोषणा करने वाले उदारमना श्रावकों की सूची संस्था को प्राप्त हुई। भविष्य में संस्था के निवेदन पर उनके सहयोग से उक्त परियोजना अपनी सर्वोत्तम उंचाई को प्राप्त करे एवं विद्यालयों की श्रृंखला के माध्यम से हम सच्चे रुप में श्रद्धाजंलि अर्पित कर पाएंगें, ऐसी मंगलकामना करते हैं।

विशेष साधारण सभा का आयोजन :

संघ स्मरण लेख एवं नियमोपनियम में संशोधन, संवर्द्धन एवं परिवर्द्धन

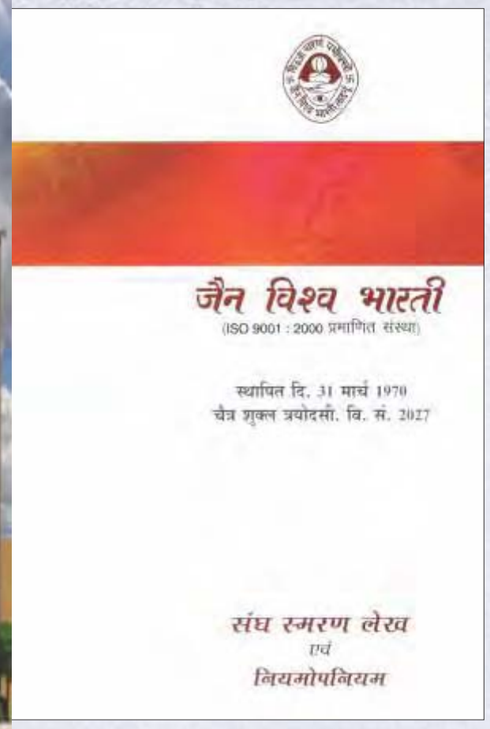

जैन विश्व भारती की शैक्षणिक इकाईयों को अल्पसंख्यक प्रास्थिति का लाभ दिलवाये जाने हेतु जैन विश्व भारती के संघ स्मरण लेख एवं नियमोपनियम में संशोधन, संवर्द्धन एवं परिवर्तन हेतु जैन विश्व भारती की विशेष साधारण सभा का आयोजन दिनांक 24 अप्रैल 2018 को आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, विशाखापट्टनम् में किया गया। जैन विश्व भारती के संघ स्मरण लेख में संविधान के नियमानुसार संशोधन इस हेतु आवश्यक विशेष बहुमत के साथ किया गया। जैन विश्व भारती के संघ स्मरण लेख एवं नियमोपनियम में संशोधन/संवर्धन करने हेतु एक समिति का गठन किया गया, जिसमें श्री जे. गौतमचंद सेठिया, चेन्नई के संयोजकीय दायित्व में श्री पुखराज बडोला एवं श्री प्रमोद बैद ने सदस्य के रूप में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

जैन विश्व भारती के कर्मचारियों का कर्मचारी भविष्य निधि एवं कर्मचारी राज्य बीमा में पंजीयन।

जैन विश्व भारती में कार्यरत कर्मचारियों की कल्याणकारी योजनाओं एवं राजकीय नियमों के अन्तर्गत समस्त कर्मचारियों को राज्य सरकार के अधीन कर्मचारी भविष्य निधि एवं कर्मचारी राज्य बीमा के अन्तर्गत पंजीयन करवाया गया। ज्ञातव्य है कि पूर्व में स्टाफ सिक्योरिटी फण्ड नाम से कर्मचारी कल्याण योजना गतिमान थी। कर्मचारी कल्याण की दिशा में जैन विश्व भारती का यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

स्मृति की रेखाएं : आनंद का स्रोत

अपने स्वयं के संबंध में, सहयोगियों के संबंध में अपने आप को दूर रखकर कुछ करना सहज नहीं होता। यह साहस तो किया गया है, पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगतता भी बहुत कठिन है। हमारी दृष्टि के सीमित शीशे में जो कुछ दिखाई दिया, वो बहुत उज्ज्वल और विशाल है। इसे मानकर पढ़ने वाले ही इसकी कुछ झलक पा सकेंगे।

यात्रा के युगल

शिक्षा : आधुनिक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों का संगम

आराध्य के चरणों में वंदन। जैन विश्व भारती को शिक्षा का पर्याय कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जैन विश्व भारती के अन्तर्गत शैक्षिक उपक्रमों के संचालन का कार्य प्रारम्भ से ही किया जा रहा है। शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण जैन विश्व भारती के शैक्षिक उपक्रमों की अनूठी विशेषता है। मेरे लिए यह एक अत्यन्त ही सुखदता का अनुभव था कि जैन विश्व भारती के महत्वपूर्ण सकार शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष का दायित्व मुझे प्राप्त हुआ। वैसे भी शिक्षा के उपक्रम मेरे लिए रुचि के विषय हैं एवं मेरी यही भावना रहती है कि शिक्षित समाज ही देश के विकास का सोपान है।

जैन विश्व भारती की टीम के साथ सर्वप्रथम मैनें महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर का अवलोकन किया एव एक विचार जेहन में आया कि जयपुर जैसे महानगर में विद्यालय का संचालन किया जाना कोई सहज कार्यन नहीं है तथा इसके लिए विद्यालय में संसाधनों की पूर्ति आवश्यक है। इस कार्य में मेरा सहयोग दिया साथी श्री गौरवजी एवं श्री पन्नालालजी ने। इस सत्र में विद्यालय ने अभूतपूर्व प्रगति की है, नवीन विंग के निर्माण के अतिरिक्त विद्यालय आर्थिक रुप से सक्षम भी बना है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्मस्थली में स्थित आचार्य महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर को उच्च शिक्षा हेतु तैयार किया जाना प्रथम प्राथमिकता रही एवं इस हेतु कम्प्यूटर लैब, नवीन लाइब्रेरी एवं अन्य संसाधनों के साथ प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की गयी एवं वर्तमान में विद्यालय प्रगति की ओर अग्रसर है एवं सीनीयर सैकेण्डरी में क्रमोन्नत हो गया है। विमल विद्या विहार, लाडनूं यद्यपि पूर्व से स्थापित था परन्तु लाडनूं शहर मेुं अपनी विशिष्ट पहचान कायम करने के लिए आवश्यक था नवीन प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति। परिणाम सामने आया है विद्यालय के दस विद्यार्थियों ने बोर्ड परीक्षाओं में 10 सीजीपीए अंक प्राप्त किए एवं आस पास के क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा।

प्रसन्नता के भावों की अनुभूति हो रही है कि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष के नाते मुझ पर बहुत सारे लक्ष्यों की जिम्मेदारी थी। यद्यपि शत प्रतिशत लक्ष्य तो प्राप्त नहीं कर पाया हूं परन्तु विकास की ओर विद्यालयों को अग्रसर तो कर पाया हूं, इससे मन में आत्मतोष का अनुभव हो रहा है। राणावास शिक्षण संस्थान एवं गणाधिपति इंजीनियरिंग कॉलेज के अनुभवों से मुझे बहुत सहायता प्राप्त हुई एवं मैं अपनी रुचि के विषय में विशेष योग्यता प्राप्त करुं, ये मेरी कामना रही। पूज्यप्रवर की कृपा दृष्टि एवं सक्रिय एवं सजग टीम एवं विशेष रुप से अध्यक्ष श्री बी.रमेशचंद बोहरा एवं मंत्री श्री राजेश कोठारी के विशेष सहयोग से जैन विश्व भारती के शैक्षणिक उपक्रम अपना एक विशेष स्थान कायम कर रहे हैं। मैं तीनों विद्यालयों के संयोजको का भी आभारी हूं जिन्होनें विद्यालयों में मेरी नीतियों को स्वीकार किया एवं कार्य हेतु सुन्दर वातावरण प्रदान किया।

विद्यालयों के विकास का ही परिणाम है कि जैन विश्व भारती को आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के अवसर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के आवासीय विद्यालय के निर्माण का दायित्व प्राप्त हुआ है। मेरी मंगलकामना है कि आने वाली टीम इस कार्य को सुनियोजित रुप से पूर्ण करें।

अमरचंद लुंकड़
विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग

साहित्य : अतीत और अनागत का समावेश

आराध्य के चरणों में वंदन। जैन विश्व भारती की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति साहित्य के अन्तर्गत विगत 40 दशकों से बहुपयोगी साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है तथा अतीत एवं अनागत को जोड़कर नवीन उन्मेष देता है। आगम,जैन विद्या, प्रेक्षाध्यान से संबंधित साहित्य के साथ साथ धर्मसंघ के आचार्यों, चारित्रात्माओं, समण-समणीवृन्द तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/संपादित साहित्य का प्रकाशन जैन विश्व भारती द्वारा किया जा रहा है। प्रतिवर्ष विभिन्न शीर्षकों से लाखों पुस्तकें प्रकाशित की जाती है। मुझे साहित्य विभाग को समुन्नति की ओर अग्रसर करने का एक सुअवसर प्राप्त हुआ एवं मेरे साथी मेरे सखा श्री बी.रमेशचंद बोहरा का अत्यन्त सहयोग प्राप्त हुआ जिससे मैं उक्त प्रवृत्ति का दायित्व संभाले हुए हूं। पूज्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास की व्यवस्थाओं में मुझे एक महत्वपूर्ण दायित्व भी प्राप्त हुआ एवं मेरे लिए साहित्य के विभागाध्यक्ष का दायित्व एवं चेन्नई चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्षीय दायित्व दोनों दायित्वों को एक साथ निर्वाह करना आसान नहीं था। परन्तु पूज्यप्रवर के पावन आशीर्वाद एवं टीम के सहभागी सदस्यों के सहयोग ने मुझे विशेष सम्बल प्रदान किया। साहित्य संपोषण योजना, साहित्य आपके द्वार योजना इत्यादि के माध्यम से साहित्य विभाग को आर्थिक समृद्धता का आवरण प्रदान किया गया। हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं यथा-बांग्ला, उड़िया, तेलगु एवं रशियन भाषा में अनुवाद होना भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

पूज्यप्रवर की कृपा से आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित समस्त प्रकाशनों का विलय जैन विश्व भारती में किया जाना एक विशेष उपलब्धि रही एवं साहित्य की दृष्टि से जैन विश्व भारती समृद्धता की ओर अग्रसर है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्मशताब्दी पर प्रकाशित किए जाने वाले आचार्य महाप्रज्ञ वांग्मय परियोजना के वृहद् कार्य का दायित्व भी जैन विश्व भारती को प्राप्त होना, अपने आप में गौरव का विषय है। विगत एक वर्ष से उक्त कार्य जैन विश्व भारती के अधीन सुचारु रुप से गतिमान है।

सामान्यत: मेरे स्वभाव के बारे में यह प्रचलित है कि मैं आधुनिक तकनीकों के प्रति जागरुक हूं। इस धारणा को बनाये रखने के लिए आवश्यक था कि मेरे विभागीय दायित्व के अधीन भी तकनीकी माध्यमों से साहित्य का प्रचार प्रसार एवं विक्रय-वितरण किया जाये। सहज ही ऐसा अवसर आया और टीम सेनट्रोनिक्स, जलगांव के माध्यम से जैन विश्व भारती के साहित्य के ऑनलाइन विक्रय हेतु नवीन वेबसाईट का निर्माण किया गया एवं साथ ही साथ विक्रय हेतु लगभग 700 शीर्षकों की पुस्तकें उपलब्ध करवायी गयी। आधुनिक युग के अनुकूल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त अमेजन ऑनलाइन शॉप पर भी जैन विश्व भारती प्रकाशन आज उपलब्ध है। मात्र मेरे लिए ही नहीं वरन् जैन विश्व भारती परिवार के लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि आज घर बैठे-बैठे पाठक जैन विश्व भारती का साहित्य पढ सकते हैं एवं विक्रय कर सकते हैं।

मैं कृतज्ञ हूं पूज्यप्रवर का जिन्होंने ऐसे दायित्व के पालन का अवसर दिया जो समाज की दिशा को बदलने में महत्ती भूमिका निर्वाह करता है। साहित्य समिति के प्रति भी कृतज्ञ हूं जहां से मुझे समय समय पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मेरी मंगलकामनाएं है कि जैन विश्व भारती का साहित्य विश्वस्तर पर अपनी पृथक पहचान कायम करें।

धरमचंद लुंकड़
विभागाध्यक्ष
साहित्य विभाग

साधना का पर्याय प्रेक्षाध्यान

आराध्य के चरणों में वंदन। मेरा यह अहोभाग्य रहा कि मुझे जैन विश्व भारती जैसी गरिमामयी संस्था से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य गुरुदेव ने महती कृपा कर मुझे जैन विश्व भारती के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद का दायित्व प्रदान किया। जैन विश्व भारती के कर्मठ अध्यक्ष एवं धीर गंभीर स्वभाव के धनी श्री बी.रमेशचंद बोहरा का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होनें मेरी रुचि को ध्यान में रखते हुए मुझे जैन विश्व भारती की महत्वूपर्ण ईकाई प्रेक्षा फाउंडेशन के साथ जोड़ा। मैं स्वयं एक प्रोफेशनल होने के साथ-साथ एक साधक भी हूं एवं वर्षो से ध्यान साधना कर रहा हूं। प्रोफेशनल होने के नाते मैंने यह महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति जीवन में चिन्ताग्रस्त है एवं मानसिक शांति के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रयासरत है। प्रेक्षा फाउंडेशन का दायित्व मिलने पर सर्वप्रथम मेरे मन में यह विचार किया कि मैं प्रेक्षाध्यान की गूढ शब्दावली को सरल एवं सहज भाषा में साधकों तक अथवा साधना में रुचि रखने वाले व्यक्तियों तक सुलभ करवा सकूं। सर्वप्रथम मैनें लक्ष्य लिया कि सम्पूर्ण देशभर के प्रेक्षा साधकों को सुनियोजित करुं तथा इस हेतु माध्यम बनाया 'नवीन प्रेक्षावाहिनीयों' को। प्रेक्षावाहिनी के बैनर के अन्तर्गत मेरा लक्ष्य था कि हम कम से कम प्रेक्षावाहिनीयों की संख्या 100 के लक्ष्य को प्राप्त करे एवं 121 प्रेक्षावाहिनीयों के साथ हमने वो लक्ष्य प्राप्त किया। आज लगभग 3000 साधक प्रेक्षावाहिनीयों के माध्यम से साधना की ओर अग्रसर है। तत्पश्चात इन सभी साधकों तक प्रतिदिन प्रेक्षाध्यान के रहस्यों को सरल भाषा में पहुंचाने का कार्य किया जिसमें सोशल मीडिया की मुख्य भूमिका रही। वर्तमान में सोशल मीडिया के माध्यम से प्रतिदिन हजारों लोग प्रेक्षाध्यान के रहस्यों से परिचित हो रहे है। प्रेक्षाध्यान संबंधी आडियो को प्रत्येक दिन लगभग 1.40 लाख लोगों तक सोशल मीडिया के माध्यम से पहुंचाया जा रहा है। किसी भी उपक्रम को सुचारु रुप से संचालित किए जाने में श्रम के साथ-साथ अर्थ की भी आवश्यकता होती है, प्रेक्षा कार्ड योजना के माध्यम से इस लक्ष्य की ओर भी अग्रसर है, संभवत: लक्ष्य शीघ्र ही प्राप्त हो जायेगा। प्रेक्षा प्रशिक्षकों की भूमिका को सुदृढ बनाये जाने हेतु सभी को सेवा देने का संकल्प करवाया गया एवं प्रत्येक प्रशिक्षक अपने पूर्ण श्रम के साथ सहयोग प्रदान कर रहे हैं। सत्र 2016-18 के मध्य लगभग 225 नवीन प्रशिक्षकों ने प्रेक्षा फाउंडेशन के अन्तर्गत पंजीयन करवाया। प्रेक्षाध्यान के आवासीय शिविरों में प्रतिभागियों की संख्या में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। पूज्यप्रवर की वाणी में प्रेक्षाध्यान के नमस्कार महामंत्र आधारित प्रयोगों से पूज्यप्रवर ने हमें कृतार्थ कर दिया। मुझे मेरे कार्य में आदरास्पद प्रेक्षा प्रभारी मुनिश्री कुमारश्रमणजी का सतत दिशा निर्देशन प्राप्त रहा एवं सदैव ऊर्जा स्त्रोत के रुप में मुनिश्री का स्नेहाशीष प्राप्त रहा।

अभी भी करणीय कार्य बहुत है, प्रेक्षाध्यान को घर घर तक पहुंचाना एवं वर्तमान युग के अशांति भरे माहौल में प्रेक्षाध्यान के माध्यम से समाज को मानसिक शांति पहुंचाना है तथा जो बौद्धिक चिंतन में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को कर्म निर्जरा की ओर उन्मुख करना है। प्रेक्षाध्यान के मुझे प्रेक्षा फाउंडेशन के कार्य दायित्व के निर्वाह में जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों का सदैव सहयोग प्राप्त रहा। मेरी यह मंगलकामना है कि करणीय कार्यो के लक्ष्यों को पूर्ण करते हुए प्रेक्षाध्यान का विकास हो।

- अरविन्द संचेती
विभागाध्यक्ष, प्रेक्षा फाउण्डेशन

समण संस्कृति संकाय : जैनत्व के संस्कारों की कार्यशाला

आराध्य के चरणों में वंदन। समण संस्कृति संकाय अर्थात् ऐसा उपक्रम जो इस आधुनिकता के युग में जैन परम्पराओं एवं जैनत्व के संस्कारों के संरक्षण के लिए सतत् कार्यशील है। यद्यपि मैं इस उपक्रम से विगत लम्बे समय से जुड़ा हुआ हूं परन्तु प्रत्येक सत्र के साथ नवीन दायित्वों का प्रत्यायोजन भी किया जाता है। वर्तमान टीम के साथ मुझे कार्य करने का बेहतर अवसर प्राप्त हुआ एवं इस सत्र में विशेष रुप से आधुनिक तकनीकों के समन्वय के साथ आगे बढने का अवसर प्राप्त हुआ।

पूज्यप्रवर के इंगित अनुसार जैन विद्या सप्ताह, कार्यशालाओं के माध्यम से न केवल सम्पूर्ण देश में अपितु विदेश में भी जैनत्व की पाठशाला को इस संकाय के माध्यम से गतिमान किया। नवीन वेबसाईट के साथ ऑनलाइन फार्म की सुविधा से प्रतिभागी घर बैठे फार्म प्रेषित कर रहे हैं एवं सम्पूर्ण पाठ्यक्रम ऑनलाइन भी उपलब्ध है। विगत द्विवर्षीय सत्र में कुल 16944 प्रतिभागियों ने जैन विद्या परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। जय तिथि पत्रक की लगभग 30000 प्रतियों के माध्यम से जय तिथि पत्रक को घर घर पहुंचाया गया। इस सत्र में एक अनूठा कार्य करने का प्रयास किया गया– विगत 27 वर्षों में जितने भी व्यक्तियों ने विज्ञ उपाधि धारण की, उनका एक अधिवेशन आयोजित किया जाये एवं प्रसन्नता का विषय है कि कोलकाता चातुर्मास के दौरान उक्त

अधिवेशन का सफलतम आयोजन हुआ एवं विज्ञ उपाधि धारकों की एक निर्देशिका भी जारी की गयी।

जैन विद्या सप्ताह, जैन विद्या कार्यशाला, जैन विद्या संगठन यात्रा, दीक्षांत समारोह ऐसे आयोजन रहे जिसमें प्रतिभागियों ने अति उत्साह के साथ अपना समय दिया।

समण संस्कृति संकाय के लिए आनंद का अवसर रहा जब पूज्यप्रवर की असीम कृपा से ''आगम मंथन प्रतियोगिता'' का दायित्व भी समण संस्कृति संकाय को प्राप्त हो गया। सोशल मीडिया के माध्यम से स्वाध्याय के कार्य से आगम मंथन प्रतियोगिता के प्रतिभागियों की संख्या में अच्छी वृद्धि इंगित हुई। यू ट्यूब चैनल का भी प्रारम्भ किया गया। 25 बोल पर आधारित स्वाध्याय भी आधुनिक तकनीकों के सहयोग से करवाया गया। जैन विद्या परीक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए वर्ष में दो बार परीक्षाओं के आयोजन का निर्णय एवं परीक्षा मूल्यांकन पद्धति में सुधार संकाय की इस सत्र की विशेष उपलब्धियां रही। मेरे प्रत्येक कार्य में मेरे सहयोगी स्व. श्री महावीरजी धारीवाल, श्री महेन्द्रजी सेठिया ने भरपूर सहयोग दिया। जैन विश्व भारती स्थित संकाय कार्यालय के वातानूकलीकरण का कार्य करवाया गया एवं कार्मिकों को बेहतर कार्यदशाएं प्रदान करने का प्रयास किया गया। इस सत्र में प्रथमत: समस्त डाटा को कम्प्यूटरीकृत करने का प्रयास किया गया। प्रत्येक आयोजन में समाज के उदारमना श्रावकों का अर्थ सहयोग सदैव प्राप्त रहा।

जैन विश्व भारती के कर्मठ अध्यक्ष, सजग मंत्री एवं अन्य पदाधिकारियों के विशेष सहयोग से समण संस्कृति संकाय विकास की ओर उन्मुख है। मेरी यही मंबलकामना है कि समण संस्कृति संकाय उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो एवं पूज्यप्रवर की विशेष कृपा समण संस्कृति संकाय के प्रति प्रवर्द्धमान हो।

मालचंद बेगानी
विभागाध्यक्ष
समण संस्कृति संकाय

शोध की सकारात्मकता

आराध्य के चरणों में वंदन। हमारे आचार्यो एवं मनीषीयों ने बहुत से ऐसे विषयों पर अपनी शब्द रचनाएं तैयार की जो दुर्लभ है। ऐसे दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण विषयों को जैन विश्व भारती द्वारा उच्च स्तरीय शोध संस्थान के रुप में सदैव संकलित किया है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि मुझे शोध विभाग को संभालने का दायित्व प्राप्त हुआ। शोध विभाग ऐसा विभाग है जहां पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की मुख्य निर्देशना प्राप्त होती है, विशिष्ट चारित्रात्माओं का प्रेरणास्पद श्रम मुखर होता है।

मेरी इस दायित्व को संभालने के पश्चात ऐसी भावना रही कि कुछ ऐसे अप्रकाशित विषयों का प्रकाशन करवाया जाये जिन पर अभी तक सरल रुप में कार्य नहीं हुआ। पूज्यप्रवर की कृपा रही कि जैन विश्व भारती के अन्तर्गत विगत द्विवर्षीय सत्र में विभिन्न महत्वपूर्ण आगमों का प्रकाशन हुआ एवं अंग्रेजी अनुवाद का कार्य भी करवाया गया। इस विभाग के अन्तर्गत आगम संपादन संबंधी जैन शासन की प्रभावना का विशिष्ट कार्य किया जा रहा है।

आगम संपादन के इस महत्वपूर्ण कार्य में पूज्यप्रवर का निर्देशन, चारित्राात्माओं का अपूर्व श्रम एवं सहयोग प्राप्त होता है, उनके प्रति कृतज्ञता हेतु मेरे पास शब्द भी नहीं है। मेरा यह प्रयास है कि तीर्थकरों की वाणी में लिखित ऐसे आगमों को आम जन के समक्ष प्रस्तुत किया जाये जो दुर्लभ है एवं जिनके विषय समसामयिक भी है। मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि विगत सत्र में सूयगडो आगम का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया गया, इससे न केवल भारत अपितु विदेश में भी उक्त आगम के विषय की जानकारी सुलभ हो सकी है।

मनोज लूनिया
विभागाध्यक्ष
शोध विभाग

विमल विद्या विहार

आराध्य के चरणों में वंदन। गणाधिपति तुलसी का निरन्तर यह प्रयास रहा कि जैन विश्व भारती में ऐसा एक विद्यालय स्थापित हो जहां विद्यार्थियों को शैक्षणिक ज्ञान के साथ साथ चारित्रिक विकास की शिक्षा भी दी जाये। सर्वप्रथम मैं गणाधिपति को नमन करता हूं जिन्होनें लाडनूं जैसे एक छोटे शहर में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय की कल्पना की एवं साकार रुप भी प्रदान किया। हमारा यह सौभाग्य है कि लाडनूं नगर के प्रथम अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय के संयोजकीय पद का दायित्व प्राप्त हुआ। वर्ष 1989 में स्थापित विद्यालय सुचारु रुप से गतिमान है। हमारे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त किए हुए विद्यार्थी आज उच्च पदों पर आसीन है।

हमारे समक्ष विद्यालय के विकास की अपूर्व संभावनाए थी। विद्यालय में संचालित स्मार्ट कक्षाओं हेतु नवीन तकनीकों युक्त साफ्टवेयर की उपलब्धता में समाज के सुश्रावक श्री अभय जैन, बैंगलौर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इसी प्रकार युगानुकूल शैक्षणिक स्तर हेतु द व्होल स्कूल ट्रांसफारमेशन प्रोग्राम के अन्तर्गत विद्यालय का पुणे की सक्षम टीम के माध्यम से मूल्यांकन कार्य करवाया गया। सहशैक्षणिक गतिविधियों के अन्तर्गत विद्यालय के विद्यार्थियों हेतु इंडियन आइडल एकेडमी के साथ संगीत एवं नृत्य कक्षाओं हेतु अनुबंध किया गया जिससे सैंकड़ों विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। नवीन प्रशिक्षित शिक्षको की नियुक्ति, शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता इत्यादि से शैक्षणिक स्तर को ओर अधिक उच्च करने का प्रयास किया गया। विद्यालय का बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम विद्यालय के गौरव को प्रवर्द्धमान कर रहा है। आज भी विद्यालय का सुजलांचल में अपना एक विशिष्ट स्थान है। विद्यार्थियों के आवागमन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक तकनीकों एवं संसाधनो से युक्त बालवाहिनी बस का क्रय किया गया।

जैन विश्व भारती की प्रबंधन टीम विशेष रुप से अध्यक्ष श्री बी.रमेशचंद बोहरा, मंत्री श्री राजेश कोठारी एवं कोषाध्यक्ष श्री गौरव जैन का हमें अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ। हमने दायित्व का भार लिया था परन्तु वास्तविक दायित्व आप तीनों ने निर्वाह किया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री अमरचंद लुंकड़ के अनुभवों का विद्यालय को महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त हुआ एवं हमें विद्यालय के नीतिगत निर्णयों के बारे में कभी भी कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ।

हमारी यही मंगलकामना है कि विद्यालय आज विकास के जिस पायदान पर है, उस पायदान से भी आगे अपनी विकास यात्रा को सतत गतिमान करें।

पुखराज बडोला
संयुक्त संयोजक

तनसुख नाहर
संयुक्त संयोजक

विमल विद्या विहार स्कूल प्रबंधन समिति

आधुनिक शिक्षा एवं संस्कार का संगम

आराध्य के चरणों में वंदन। जैन विश्व भारती की शैक्षणिक ईकाई महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के प्रबंधन का दायित्व हमें लगभग तीन वर्ष पूर्व प्राप्त हुआ। जिस समय दायित्व प्राप्त हुआ, उस समय हम शैक्षणिक ईकाई के संचालन कार्यो से अनभिज्ञ थे एवं अल्पज्ञान था। परन्तु पूज्यप्रवर की असीम कृपा दृष्टि रही कि हमने कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्यों के साथ विद्यालय के विकास का बीड़ा लिया। सुनियोजित एवं क्रमबद्ध लक्ष्यों के साथ हम विद्यालय के विकास की नवीन राह पर अग्रसर हुए। प्रारम्भ में अनुभव हुआ कि जयपुर जैसे महानगर में क्या हम हमारे विद्यालय को समकक्ष अन्य विद्यालयों के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा में रख पायेंगे। परन्तु सर्वसमाज के सहयोग से सर्वप्रथम हमारा लक्ष्य रहा कि सुसभ्य परिवारों के बच्चे हमारे विद्यालय में प्रवेश लेवें एवं हम विद्यालय की मूलभूत आवश्यकताओं का विस्तार प्रथमत: करें। विद्यालय के प्रथम तल का निर्माण एवं विज्ञान लैब के निमार्ण से हमने मूलभूत आवश्यकताओं को सृजित करने का प्रयास किया तथा इस कार्य में लाडनूं निवासी एवं जयपुर प्रवासी श्री कमलसिंह बैद परिवार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

विद्यालय को सीनियर सैकेण्डरी के स्तर तक क्रमोन्नत करवाया जाना एक विशेष उपलब्धि रही। विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने के साथ साथ नव निर्माण की अपेक्षा महसूस हुयी, निर्णयस्वरुप नवीन प्ले स्कूल की कक्षाओं के संचालन हेतु नव निर्माण करवाया गया एवं युगानुकूल सुविधाओं के सृजन के साथ प्ले कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया गया। जयपुर जैसे महानगर में अपना एक स्थान बनाने के लिए सतत् प्रयास आवश्यक था एवं किसी भी विद्यालय की पहचान उसकी शैक्षणिक गुणवत्ता से ही होती है, इस बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित कर नवीन प्रिंसिपल, शिक्षकगण की नियुक्ति की गयी। शैक्षणिक गतिविधियों के साथ साथ सहशैक्षणिक गतिविधियों को भी विशेष रुप से प्रोत्साहित किया गया।

विद्यालय के संचालन हेतु यह आवश्यक था कि विद्यालय आर्थिक रुप से भी सक्षम हो, हमें इस बात से अत्यन्त उत्साहित हैं कि विद्यालय अपने स्वयं के खर्च वहन करने में आर्थिक रुप से सक्षम है। साथ ही इस बात की भी प्रसन्नता है कि विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या निरन्तर वृद्धि की ओर है। अच्छे परीक्षा परिणामों के साथ विद्यालय अपने आप को जयपुर शहर में सुस्थापित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास कर रहा है। जीवन विज्ञान की कक्षाओं के निरन्तर संचालन के साथ विद्यालय न केवल भौतिक शिक्षा मात्र ही प्रदान कर रहा है अपितु संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला के रुप में भी सुस्थापित है, जो कि विद्यालय को शहरीकरण के इस युग में गुरुकुल के रुप में प्रतिस्थापित कर रहा है।

यद्यपि विद्यालय विकास की राह पर अग्रसर है परन्तु विकास कोई स्थिर वस्तु नहीं है, विकास सदैव चलायमान रहता है। इस चलायमान विकास को गतिमान रखने के लिए साधन और साध्य दोनों हमें मिलते रहे एवं यह विकास यात्रा निरन्तर गतिमान रहे, ऐसी हमारी मंगलकामना है।

गौरव जैन मांडोत, पन्नालाल पुगलिया
संयुक्त संयोजक
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर
युगीन संदर्भ में शिक्षा का आयाम

आराध्य के चरणों में वंदन। शिक्षा जीवन निर्माण की प्रथम आवश्यकता है। तेरापंथ की आचार्य परम्परा में आचार्यश्री तुलसी ने शिक्षा को बहुत महत्व दिया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने शिक्षा को ओर अधिक महत्व दिया तथा निरन्तर शिक्षा के विकास के लिए प्रयत्नशील रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का यह चिंतन रहा कि कोई भी बच्चा अर्थाभाव अथवा संसाधनों के अभाव में शिक्षा से वंचित न रहे। आचार्यप्रवर ने समय समय पर विभिन्न गोष्ठियों, प्रवचनों में शिक्षा की महत्ता को उजागर किया। इसी बात को ध्येय बनाकर पूज्य महाप्रज्ञजी की जन्मस्थली टमकोर जैसे ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय की स्थापना की गयी। समय समय पर विद्यालय के विकास हेतु चिंतन किया गया एवं जैन विश्व भारती प्रबंधन ने इस विद्यालय को एक माडल स्कूल के रुप में विकसित करने का संकल्प लिया।

विगत सत्र में जैन विश्व भारती की टीम के आत्मीय सहयोग से विद्यालय के भवन एवं चारदीवारी को सौन्दर्यकृत किया गया एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति के समान समस्त सुविधाएं उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया। मेरा अन्तर्मन अत्यन्त प्रफुल्लित होता है जब मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की उस परिकल्पना का साकार रुप देखता हूं, जो उन्होंने टमकोर जैसे पिछड़े क्षेत्र के लिए विद्यालय के रुप में की। आचार्यो के आशीर्वाद, समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, समणी पुण्यप्रज्ञाजी के निष्ठापूर्ण श्रमसिंचन, समाज के सहयोग से यह विद्यालय जो एक घर से प्रारम्भ किया गया था, आज भव्य एवं विशाल प्रांगण में संचालित है। आज विद्यालय सीनियर सैकेण्डरी तक क्रमोन्नत हो चुका है जिसका संचालन प्राइमरी कक्षा से प्रारम्भ किया गया था।

विद्यार्थियों का बोर्ड परीक्षाओं में, सहशैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन इस विद्यालय को सम्पूर्ण क्षेत्र में एक नवीन पहचान दिलवा रहा है। अनुशासित जीवन एवं उच्च संस्कारों से विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य का निर्माण किया जा रहा है। मेरा इस विद्यालय से विशिष्ट लगाव है एवं मेरी यह भावना है कि यह विद्यालय भविष्य में उच्च शिक्षा के प्रतिष्ठित संस्थान के रुप में आगे विकसित हो। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की महती कृपा रही है कि विगत लम्बे समय से मुझे इस विद्यालय के विकास का दायित्व प्राप्त है।

नवीन प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति, उन्नत कम्पयूटर लैब एवं समृद्ध पुस्तकालय से विद्यालय के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। मैं जैन विश्व भारती की टीम एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री अमरचंद लूंकड़ के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने विद्यालय के विकास में सक्रिय सहभागिता प्रदान की।

मेरी यह मंगलकामना है कि आगामी टीम भी इस विद्यालय के विकास के सोपान में एक नया पायदान स्थापित करे।

रणजीत सिंह कोठारी

संयोजक

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल प्रबंधन समिति

विकास की गाथा : सप्त सकार की लेखनी

शिक्षा

जैन विश्व भारती संस्थान :

1. संस्थान के साथ पूर्ण समन्वय रखते हुए समन्वित रूप से विकास में अपेक्षानुसार पूर्ण सहयोग।
2. जैन विश्व भारती संस्थान की आर्थिक अपेक्षाओं की पूर्ति तथा गतिविधियों के निर्बाध संचालन हेतु समय-समय पर वित्तीय सहायता प्रदत्त।
3. चार वर्षीय बी.ए./बी.एस.सी.-बी.एड. कोर्स का शुभारम्भ।
4. चारित्रात्माओं का समय समय पर पावन पर्दापण
5. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली (यू.जी.सी.) का संस्थान का अवलोकन।
6. संस्थान के 27वें एवं 28वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन।
7. विविध ग्रीष्मकालीन कक्षाओं का आयोजन।
8. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन।
9. स्मार्ट क्लासेज व डिजिटल लेक्चर सुविधा का शुभारम्भ।
10. नि:शुल्क योग कक्षाओं का संचालन।
11. श्रीमती सावित्री जिन्दल, हिसार जैन विश्व भारती संस्थान की कुलाधिपति के रुप में नियुक्ति।
12. जैन विश्व भारती संस्थान के दसवें दीक्षान्त समारोह का दिनांक 13 अक्टूबर 2017 को परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में कोलकाता में आयोजन।

विमन विद्या विहार

1. उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम।
2. लाडनूं क्षेत्र हेतु नवीन वाहन सुविधा।
3. स्मार्ट कक्षाओं हेतु उच्च स्तरीय नवीन साफ्टवेयर की उपलब्धता।
4. विद्यालय नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण हेतु श्री प्रकाशचंद बैद कोलकाता को संयोजकीय दायित्व प्रदत्त।
5. विद्यालय के एन.सी.सी. दल की छात्राओं द्वारा विभिन्न आयोजन।
6. वार्षिक स्पोर्ट्स डे का भव्य आयोजन।
7. विद्यालय में जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन।
8. विद्यार्थी यंग अचीवर अवार्ड से सम्मानित तथा बोर्ड परीक्षाओं में मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदत्त।
9. जैन विश्व भारती परिसर में विद्यार्थियों द्वारा सघन पौधारोपण।
10. इंडियान आईडल एकेडमी के साथ नृत्य एवं संगीत की कक्षाओं के नियमित संचालन हेतु अनुबंध एवं स्टूडिया की स्थापना।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर

1. उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम।
2. विद्यार्थियों के आवागमन की सुविधार्थ दो नई स्कूल बसों का क्रय।
3. प्रवेशोत्सव का आयोजन एवं ज्ञानोत्सव का आयोजन।
4. वार्षिकोत्सव का आयोजन।
5. खेल युक्त शैक्षणिक वातावरण।
6. विद्यालय परिसर को हरा-भरा व सुरम्य बनाने की दृष्टि से परिसर हरितीकरण एवं वृक्षारोपण।
7. विद्यालय में वर्षा जल संग्रहण हेतु आधुनिक पद्धति पर आधारित नवीन भूमिगत टैंक का निर्माण कार्य जारी।
8. शैक्षणिक भ्रमण के कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा प्रसिद्ध पिलानी साइंस म्यूजियम का भ्रमण।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

1. उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम।
2. वार्षिकोत्सव का आयोजन
3. विद्यालय के नवीन प्राईमरी विंग का उद्घाटन
4. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालय में विज्ञान विषय के संचालन हेतु अनुमोदन
5. सुरक्षा की दृष्टि विद्यालय परिसर में सी.सी.टी.वी. कैमरों एवं फायर अलार्म की व्यवस्था।
6. विद्यालय के स्वागत कक्ष का नवीनीकरण एवं वातानुकूलीकरण।
7. बाल मेले का आयोजन।
8. सहशैक्षणिक भ्रमण का आयोजन।
9. चारित्रात्माओं का समय-समय पर विद्यालय प्रांगण में पावन पदार्पण।
10. ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, बैंगलौर

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के अवसर पर सम्पूर्ण देशभर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के नाम से विद्यालयों की श्रृंखला का दायित्व जैन विश्व भारती को प्राप्त हुआ है एवं इसके अन्तर्गत देवराज-मूलचंद नाहर ट्रस्ट द्वारा बैंगलौर में संचालित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, बैगलोर को जैन विश्व भारती के अन्तर्गत सम्बद्धता प्रदान की गयी है।

शोध

शोध

1. जैन विश्व भारती के शोध विभाग को सक्रिय करने हेतु शोध विभाग में संयोजक की नियुक्ति।
2. आचार्यों के वाचना प्रमुखत्व/प्रधान संपादकत्व में संपादित/अनुवादित अप्रकाशित आगमों के शीघ्र प्रकाशन संबंधी प्रक्रिया जारी एवं सूयगडो (अंग्रेजी, रायपसेणियं नवीन) आगमों का प्रकाशन।
3. जैन विश्व भारती द्वारा पूर्व में प्रकाशित अनुपलब्ध आगमों के प्राथमिकता से पुर्नप्रकाशन की व्यवस्था।
4. आगम प्रकाशन सहयोगी के रूप में अनुदानदाताओं से अनुदान राशि प्राप्त कर नवीन आगमों के प्रकाशन एवं पूर्वमुद्रित आगमों के पुर्नमुद्रण की सुचारू व्यवस्था।
5. जैन विश्व भारती के साहित्य विभाग की वेबसाईट पर प्रमुख 17 आगम ई-बुक्स के रुप में उपलब्ध।
6. द्विवर्षीय कार्यकाल में 6 नवीन आगमों का प्रकाशनों।

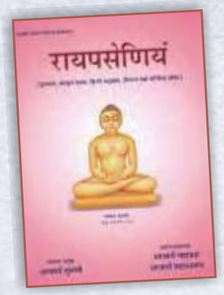

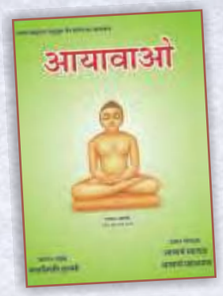

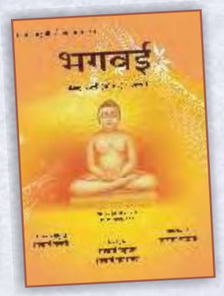

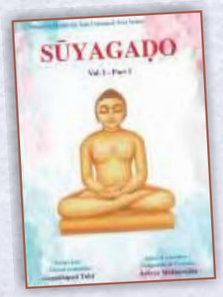

साहित्य

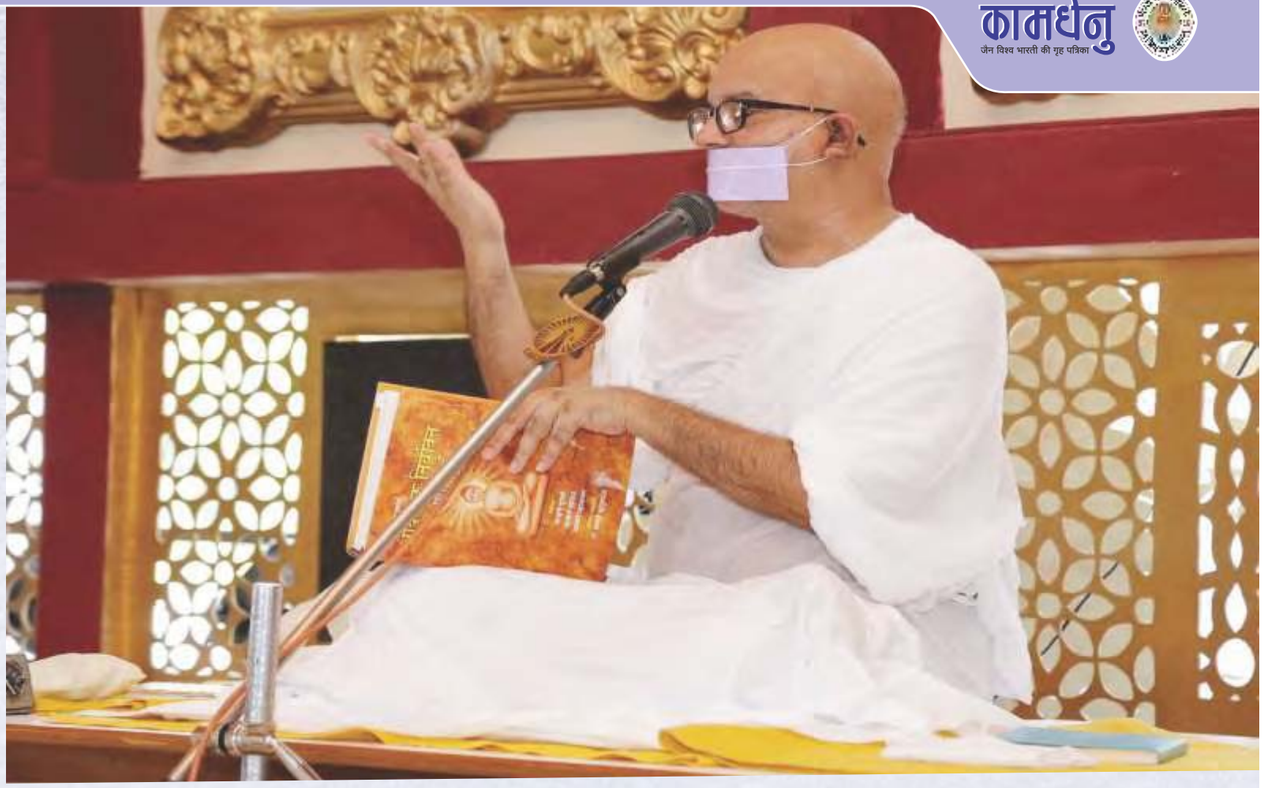

1. द्विवर्षीय कार्यकाल के दौरान 41 नवीन शीर्षकों की 84952 प्रतियां एवं 55 शीर्षकों से पुनर्मुद्रित 136888 प्रतियां प्रकाशित।
2. साहित्य संपोषण योजना के अंतर्गत अब तक कुल 6 संपोषकों से विशेष अनुदान प्राप्त।
3. जैन विश्व भारती के साहित्य के ऑनलाईन स्टोर पर क्रय हेतु अब तक 780 पुस्तकें तथा अध्ययन हेतु 295 पुस्तकों की उपलब्धता।
4. दिनांक 24-26 फरवरी 2017 को जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा Engaging Jainism With Modern Issues विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जैन विद्या से संबंधित साहित्य की स्टॉल लगाई गई।
5. श्री कमल कटारिया, चेन्नई के सहयोग से Online Shopping Store "Amazon" पर जैन विश्व भारती के साहित्य की उपलब्धता।
6. आचार्यश्री महाश्रमणजी की विभिन्न कृतियों का बंगाली, उड़िया व तेलगु भाषा में अनुवादन व प्रकाशन। जीवन विज्ञान भाग-1, 2 एवं 3 का रशियन भाषा में अनुवादन व प्रकाशन।
7. मुनिश्री किशनलालजी द्वारा लिखित एवं श्रीमती सुधामही रघुनाथन द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवादित पुस्तक The Secret of Path Lives का जैन विश्व भारती के साथ अनुबंध के अंतर्गत बी. जैन पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशन।
8. जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के आई.एस.बी.एन. नम्बर की प्रक्रिया पूर्ण तथा अब तक 15 पुस्तकों के के आई.एस.बी.एन. नम्बर प्राप्त।
9. अमेजन किण्डल जो कि दुनियाभर में ईबुक्स पाठकों के लिए सर्वोतम साईट है, पर भी ई-बुक्स उपलब्ध करवायी जा चुकी है। प्रथम ई-बुक्स के रुप में आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृति 18 पाप पुस्तक। जैन विश्व भारती प्रकाशन की कुल 15 पुस्तकें वर्तमान में किण्डल पर उपलब्ध।
10. आदर्श साहित्य संघ का जैन विश्व भारती में विलीनीकरण एवं विलीनीकरण के पश्चात् आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित साहित्य जैन विश्व भारती को सुपुर्द।
11. साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं विक्रय हेतु इन्दौर में प्रज्ञा पुस्तकालय द्वारा जैन विश्व भारती के साहित्य डिपो का संचालन एवं गुजरात, दिल्ली तथा पश्चिम बंगाल में डिपो का निर्माण प्रस्तावित।
12. दिनांक 17-25 फरवरी 2018 तक श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में आयोजित बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं वृहद् श्रावक सम्मेलन, हनुमानगढ में जैन विश्व भारती के साहित्य के स्टॉल के माध्यम से प्रचार-प्रसार एवं विक्रय।
13. साहित्य के प्रचार प्रसार हेतु श्री उमेश सेठिया को मानद प्रबंध निदेशक, साहित्य विभाग के रुप में नियुक्ति। देशभर के महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशन हाउस से सम्पर्क।

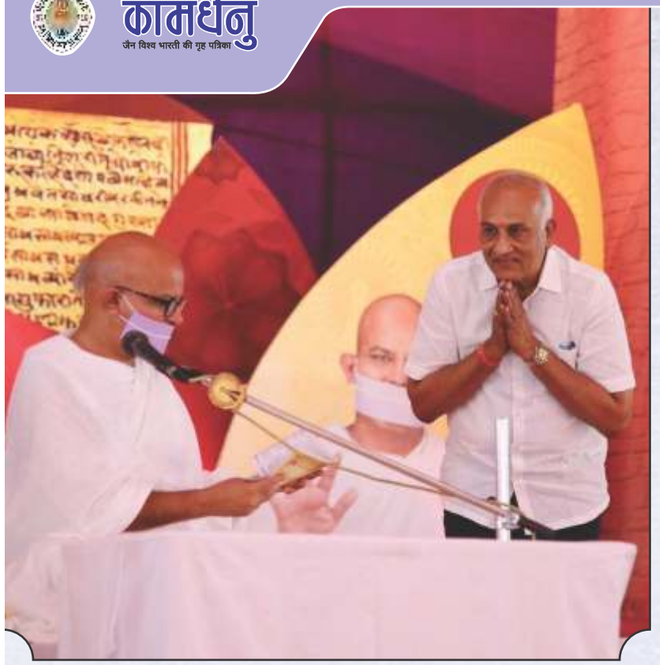

समण संस्कृति संकाय

1. दिनांक 07 जुलाई 2017 को जैन विद्या के 19वें एवं दिनांक 25 जुलाई 2018 को 20वें दीक्षान्त समारोह का परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजन एवं क्रमशः 86 व 92 विज्ञ उपाधि धारकों को उपाधियां प्राप्त।
2. जैन विद्या परीक्षाओं का वर्ष में दो बार आयोजन।
3. जैन विद्या के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं अधिक से अधिक परीक्षार्थियों व कार्यकर्ताओं को जोड़ने के उद्देश्य से संपूर्ण भारत भर में जैन विद्या दिवस एवं जैन विद्या सप्ताह का आयोजन।
4. जैन विद्या परीक्षाओं से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के प्रभारी, आंचलिक संयोजकों व केन्द्र व्यवस्थापकों के आपसी समन्वय व सहयोग से जैन विद्या के कार्य को गति प्रदान करने की दृष्टि से प्रभारी, आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक कार्यशालाओं का आयोजन।
5. जैन विद्या के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करने की दृष्टि से देश के विभिन्न क्षेत्रों में राज्य/अंचल स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन।

6. जैन विद्या परीक्षाओं की पूर्व तैयारी की दृष्टि से प्रथम बार देश के विभिन्न क्षेत्रों में जैन विद्या संपर्क कक्षाओं का आयोजन।
7. जैन विद्या के प्रति कार्यकर्ताओं एवं परीक्षार्थियों में रूचि जागृत करने के उद्देश्य से जैन विद्या संगठन यात्रा का शुभारम्भ।
8. जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं के सुचारू संचालन हेतु अनुदान राशि के अनुसार अनुदानताओं की चार श्रेणियों के अंतर्गत सहयोग से जैन विद्या कोष की स्थापना।
9. जैन विद्या के परीक्षार्थियों के बौद्धिक विकास हेतु लेख प्रतियोगिता का शुभारम्भ।
10. सोशल मीडिया के माध्यम से समण संस्कृति संकाय की गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार।
11. समण संस्कृति संकाय की नवीन वेबसाईट का निर्माण sss.jvbharati.org वेबसाईट पर जैन विद्या के नौ वर्षीय पाठ्यक्रम की समस्त सामग्री एवं परीक्षार्थियों की सुविधार्थ परीक्षा फार्म की आनलाइन उपलब्धता।
12. जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारकों के संपूर्ण परिचय संकलन हेतु 'जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारक निर्देशिका' का निर्माण।
13. जय तिथि पत्रक 2074 एवं 2075 का प्रकाशन।
14. आगम स्वाध्याय के प्रति रूचि जागृत करने के उद्देश्य से संचालित 'आगम मंथन प्रतियोगिता' का समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत आयोजन। आलोच्य अवधि में आवश्यं आगम पर आधारित 'आगम मंथन प्रतियोगिता- X तथा भगवई भाग-1 आगम पर आधारित 'आगम मंथन प्रतियोगिता- XI का आयोजन।

जीवन विज्ञान विभाग (विशेष आयोजन)

1. दिनांक 12 नवम्बर 2016 एवं दिनांक 02 नवम्बर 2017 को देश-विदेश में जीवन विज्ञान दिवस समारोह का भव्य आयोजन। हजारों विद्यार्थियों एवं सैंकड़ों विद्यालयों की सहभागिता।
2. संस्कार निर्माण प्रतियोगिता के अभिनव रुप का पैन इण्डिया कम्पीटीशन के रुप में दिनांक 24 सितम्बर 2017 को शुभारम्भ किया गया। प्रतियोगिता में 260 संस्थाओं के कुल 15801 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
3. जीवन विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के संशोधन एवं संवर्द्धन का कार्य जारी। जीवन विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का बांग्ला संस्करण जारी एवं तमिल संस्करण का कार्य गतिमान।
4. जीवन विज्ञान विभाग एवं जीवन विज्ञान अकादमी, कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 05-07 अक्टूबर 2017 को राजरहाट, कोलकाता में आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में एवं मुनिश्री योगेशकुमारजी के निर्देशन में **Jeevan Vigyan : A value based Education System** विषय पर त्रिदिवसीय सेमिनार का आयोजन।
5. देश के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन विज्ञान विद्यार्थी-शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। हजारों विद्यार्थी व शिक्षक लाभान्वित।
6. जीवन विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के लिंक हेतु नवीन वेबसाईट **www.fol4u.online** का शुभारम्भ।
7. जीवन विज्ञान को अधिकाधिक विद्यालयों में पाठ्यक्रम में प्रारम्भ करवाये जाने के उद्देश्य से देश के विभिन्न प्रान्तों में कार्यकर्ता सम्मेलन, गोष्ठियों इत्यादि का आयोजन।

साधना : प्रेक्षा फाउण्डेशन

01. प्रेक्षा कार्ड योजना के अन्तर्गत अब तक 47 प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड, 26 गोल्डन कार्ड एवं 3 सिल्वर कार्ड धारकों ने सदस्यता प्राप्त की।
02. प्रेक्षा संवर्द्धन योजना के अन्तर्गत NACH योजना (पांच एवं दस वर्षीय) के अन्तर्गत विशेष अनुदान की प्राप्ति।
03. सम्पूर्ण देशभर में प्रेक्षावाहिनीयों की संख्या 124 तक पहुंची एवं प्रेक्षावाहिनीयों के माध्यम से पंजीकृत साधक/साधिकाओं की संख्या ने लगभग 3000 का आंकडा प्राप्त किया।
05. सम्पूर्ण देशभर में कुल 508 प्रेक्षा प्रशिक्षक पंजीकृत एवं समस्त प्रशिक्षकों का विस्तृत ब्यौरा प्रेक्षा वेबसाईट पर उपलब्ध।
06. सोशल मीडिया के माध्यम से लाखों लोगों तक प्रेक्षाध्यान पर आधारित पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के ऑडियो एवं वीडियो का नियमित संप्रेषण तथा प्रेक्षाध्यान आधारित पुस्तकों का सोशल मीडिया के माध्यम से संप्रेषण।
07. दिनांक 11 फरवरी 2017 को आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर में मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन।
08. तुलसी अध्यात्म नीडम में नमस्कार महामंत्र आधारित प्रेक्षाध्यान आवासीय शिविरों का शुभारम्भ। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की वाणी में प्रेक्षाध्यान शिविर में करवाये जाने वाले प्रयोगों पर विशेष ऑडियो जारी।
09. आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में विवेक विहार कोलकाता में नमस्कार महामंत्र आधारित त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का सफल आयोजन।
10. पूजयप्रवर ने महती कृपा कर दिनांक 30 सितम्बर को प्रेक्षादिवस के रुप में घोषित किया।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

- रसायनशाला के उत्पादों के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु समय-समय पर देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रायोजकों के सहयोग से नि:शुल्क आयुर्वेदिक शिविरों का आयोजन। विशषत: कोलकाता चातुर्मासकाल में नि:शुल्क परामर्श केन्द्र का राजरहाट में संचालन।
- उत्पादों के समुचित संरक्षण हेतु रसायनशाला के मुख्य स्टोर का वातानुकूलीकरण।
- उत्पादन क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से रसायनशाला में नवीन मशीनों की स्थापना यथा च्यवनप्राश हेतु नवीन मशीन का स्थापन।
- रसायनशाला द्वारा निर्मित औषधियों के विक्रय एवं समुचित प्रचार-प्रसार की दृष्टि से देवराज मूलचंद नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर द्वारा नव प्रतिष्ठान 'महेन्द्रा आयुर्वेद सेन्टर' का बैंगलोर में शुभारम्भ।
- कर्नाटक राज्य के बैंगलोर, मैसूर आदि क्षेत्रों के आयुर्वेद विश्वविद्यालयों में उत्पादों का व्यापक प्रचार-प्रसार।
- द्विवर्षीय कार्यकाल के दौरान रसायनशाला के ओ.पी.डी. विभाग के अंतर्गत 8208 रोगी लाभान्वित।
- आधुनिक युग की मांग के अनुकूल उत्पादों के सुविधापूर्ण विक्रय हेतु नवीन ऑनलाइन वेबसाईट् ऐमूंईीअपण्बवउ का शुभारम्भ।
- सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के नवीन एवं आकर्षक लोगो का निर्माण।
- नवीन उत्पाद के अन्तर्गत अनुबंध के अधीन दन्तप्रेश नाम से टूथपेस्ट का निर्माण कार्य।

पुरस्कार सम्मान समारोह

पुरस्कार का नाम	पुरस्कार प्राप्तकर्ता	वर्ष	प्रायोजक	तिथि	पावन सान्निध्य	स्थान
आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान	स्व. कन्हैयालालजी सेठिया, सुजानगढ़	2012	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता	08.10.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण	महाश्रमणजी आचार्यश्री प्रवास स्थल, कोलकाता
प्रज्ञा पुरस्कार	डॉ. एन. एम. सिंघवी, ब्यावर	2014	श्री उम्मेदसिंह, विनोदसिंह, दिलीप दूगड़ परिवार, हैदराबाद-गुवाहाटी-तुरा	08.10.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोलकाता
जय तुलसी विद्या पुरस्कार	तुलसी बाल विद्या मंदिर हाई स्कूल, पेटलावद	2017	चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत	08.10.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोलकाता
गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार	श्रीमती पुखराज सेठिया, कोलकाता	2016	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता	09.10.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोलकाता
गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार	श्रीमती सुषमा आंचलिया, दिल्ली	2017	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता	09.10.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोलकाता
संघ सेवा पुरस्कार	श्री कन्हैयालाल छाजेड़, दिल्ली	2017	नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट, दिल्ली	22.10.2017	'शासन स्तंभ' मंत्रीमुनि मुनिश्री सुमेरमलजी	अणुविभा केन्द्र, जयपुर
प्रज्ञा पुरस्कार	डॉ. बजरंगलाल गुप्ता, दिल्ली	2013	श्री उम्मेदसिंह, विनोदसिंह, दिलीप दूगड़ परिवार, हैदराबाद-गुवाहाटी-तुरा	02.11.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोलकाता
आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार	डॉ. नरेन्द्र कोहली, दिल्ली	2017	सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी	02.11.2017	परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, कोलकाता

आनन्द निलय कार्य प्रगति

अन्य कार्य

01. जय तुलसी फाउंडेशन के नवीन कार्यालय का जैन विश्व भारती द्वारा निर्माण एवं सुपुर्दगी।
02. जैन विश्व भारती परिसर में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेन्टर का निर्माण।

परिसर

जैन विश्व भारती परिसर में हरितीकरण आरोग्यवर्धक आवंला का रोपण एवं संरक्षण

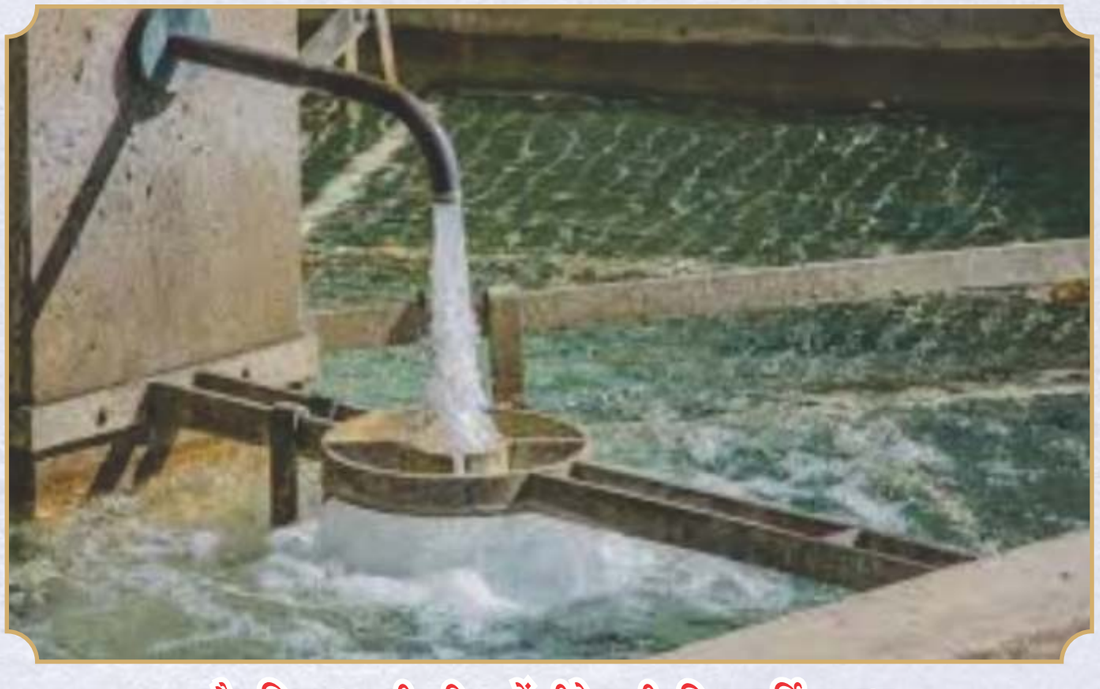

जैन विश्व भारती परिसर में मीठे पानी की आपूर्ति प्रारम्भ

विशिष्टजन का आगमन

राजस्थान की मुख्यमंत्री महोदया का आगमन एवं प्रवास

1. जैन विश्व भारती में राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया का दिनांक 03 मई 2018 को आगमन एवं प्रवास। तपस्वी मुनिश्री जयकुमारजी के सेवा–दर्शन का लाभ प्राप्त करते हुए। जैन विश्व भारती के न्यासी श्री भागचंद बरड़िया, संयुक्त मंत्री श्री जीवनमल जैन एवं जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति डा. बच्छराज दुगड़ स्वागत करते हुए।

2. केन्द्रीय खाद्य आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामलात तथा वाणिज्य राज्य मंत्री श्री सी.आर.चौधरी का जैन विश्व भारती में आगमन।
3. खाजूवाला (बीकानेर) के विधायक एवं संसदीय सचिन डा. विश्वनाथ मेघवाल एवं यू.आई.टी. बीकानेर के चैयरमेन श्री महावीर रांका का जैन विश्व भारती में आगमन।
4. राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. जसबीर सिंह का जैन विश्व भारती में आगमन।

जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में मुनिवृन्द का सेवार्थ प्रवेश

09 फरवरी 2017 को जैन विश्व भारती स्थित भिक्षु विहार में एक वर्ष की सेवा–चाकरी हेतु मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी का अपने सहवर्ती संतों के साथ जैन विश्व भारती में आगमन।

29 मार्च 2018 को मुनिश्री जयकुमारजी का अपने सहवर्ती संतों मुनिश्री मुदितकुमारजी, मुनिश्री रोहितकुमारजी एवं मुनिश्री रतनकुमारजी का जैन विश्व भारती में आगमन।

अभिनन्दन एवं अभिवनन्दन समारोह

न्यास मण्डल व संचालिका समिति की बैठकें

न्यास मण्डल

क्र. सं.	बैठक	स्थान	दिनांक व समय
01.	प्रथम बैठक	कॉन्फ्रेन्स हॉल, जैन विश्व भारती, लाडनूं	04.10.16, मध्याह्न 2.30 बजे
02.	द्वितीय बैठक	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, धुबड़ी	31.12.16, सायं 5.00 बजे
03.	तृतीय बैठक	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, पावापुरी	09.04.17, मध्याह्न 2.00 बजे
04.	चतुर्थ बैठक	कॉन्फ्रेंस हॉल, जैन विश्व भारती, लाडनूं	03.06.17, प्रात: 11.30 बजे
05.	पंचम बैठक	श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ भवन, ट्रिपलीकेन चेनन्ई	15.07.17, मध्याह्न 03.00 बजे
06.	षष्ठम बैठक	श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ भवन, ट्रिपलीकेन चेनन्ई	11.11.17, सायं 05.00 बजे
07.	सप्तम बैठक	आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल, कटक (ओडिशा)	23.01.18, प्रात: 9.30 बजे
08.	अष्टम बैठक	कॉन्फ्रेंस हॉल, जैन विश्व भारती, लाडनूं	17.06.18, प्रात: 10.00 बजे
09.	नवम् बैठक	आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल, माधावरम्, चेन्नई	21.07.18, सायं 4.00 बजे

संचालिका समिति

क्र. सं.	बैठक	स्थान	दिनांक व समय
01.	प्रथम बैठक	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, धारापुर, गुवाहाटी	16.10.16, मध्याह्न 1.30 बजे
02.	द्वितीय बैठक	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, धुबड़ी	31.12.16, सायं 6.00 बजे
03.	तृतीय बैठक	आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, पावापुरी	09.04.17, मध्याह्न 3.00 बजे
04.	चतुर्थ बैठक	कॉन्फ्रेंस हॉल, जैन विश्व भारती, लाडनूं	03.06.17, मध्याह्न: 12.30 बजे
05.	पंचम बैठक	श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ भवन, ट्रिपलीकेन चेनन्ई	15.07.17, मध्याह्न 04.00 बजे
06.	षष्ठम बैठक	श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ भवन, ट्रिपलीकेन चेनन्ई	11.11.17, सायं 06.00 बजे
07.	सप्तम बैठक	आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल, कटक (ओडिशा)	23.01.18, प्रात: 10.00 बजे
08.	अष्टम बैठक	श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ भवन, ट्रिपलीकेन चेनन्ई	10.03.18, सायं 05.00 बजे
09.	नवम बैठक	कॉन्फ्रेंस हॉल, जैन विश्व भारती, लाडनूं	17.06.18, प्रात: 11.00 बजे
10.	दशम् बैठक	आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल, माधावरम्, चेन्नई	21.07.18, सायं 5.00 बजे